





आयुवददृशायाः। सर्वेक्षणीयदर्शनं। आयुर्गीलपुष्पायाम् नृषवेष्टाविधिथा ॥ ० ॥ इतं ग्व  
 आदियं वेष्टासाकसंव नालिरुदधिकित्तासंव लोकडागाव गीलस्वरावरिग्व गुणव  
 कश्चक्षवेष्टाया ॥ ११ ॥ पितृपीणामरुदक्षा साकुक्षमिष्टवाचक ॥ पुत्रिधाकथिनधे  
 व सयुक्तालपसस्यत ॥ ० ॥ अत्र अजानिर्ग विवक्षल सायुवकयादरि कथिमशव  
 थक्षलुवालयारिग्व ॥ १२ ॥ सक्षदकगुलीगाथे लघुदीये जिगाक्षव ॥ सन्नससुस  
 मात्ताकि नृषवेष्टकडयत ॥ ० ॥ अक्षलगाकयावकवाच्यरुव अर्थवागवयु अक्षल

लियरिग्व अन्धकसायुसअस्यागयाक श्वक्षलिलिखिकथाय ॥ १३ ॥ इतिगिगाक्षलगा  
 वक्ष वलवापियदर्शन ॥ अयुमादिसदायक यतिहालसडयत ॥ ० ॥ काययोअ  
 नृपसंव वलवक लोकवगाव यमादिमशव विवक्षल श्वक्षपतिहालधाय ॥ १४  
 समसक्षगसायुक्ष यद्विग्व जिगाक्षमश्वेयोत्तयेगुलायाम् अष्टाश्वक्षाविधि  
 यत ॥ ० ॥ रुकाककोसमर्थ विवक्षल पत्र ॥ इत्येवजयनपरुव धीयवक इ  
 नवक गुणवक श्वक्षमनिधाय ॥ १५ ॥ समसक्षदयगायुक्ष वाहमनपनाजित



॥ इमे यो यो यो गुः लयः ॥ ३ ॥ अस्मात्तु का विधियतः ॥ ० ॥ समस्तसासु सङ्गमसासु  
 धमवेद्य लावसन्ध्याव धूतवीन गुलवन धुक्क अस्मान्धाय ॥ १२ ॥ मन्त्रा विवे  
 ग्य दृष्ट्याः यत्र लिख्यते यत्र द्रव्यं धीवाय अस्मात्तु दीव नृपदग विधियतः ॥ ० ॥  
 मुख्या यामहिद वचनय तत्र स्नानी भववाधवराय व धीयवने रुक्क उक्ता क  
 धुक्क हत श्चायकः ॥ १३ ॥ याधिवस्यत रुव्यस्य वक्षामि गुलवन कल धथनस्य वद्वतया  
 आ लाङ्गणावत धेवव ॥ १४ ॥ राजायाव उन्नावनयाव गुलवन कल धुक्क हत व

॥ १५ ॥ अङ्गुलीवनन राजासु वमानयादाव विधिरुत धुक्क रुक्मप्रियाय ॥ १५ ॥  
 अङ्गुलीवननानी दया कृच्छेनिसंग्रह शास्त्रादि मन्त्रावसानेषु नतयास्यति वि क्रिया  
 ॥ ० ॥ अथ निचयन कलवन लाङ्गणाप्रियाय दया दध्व विद्या वि क्रियाम  
 याकः ॥ १६ ॥ यदि गेव गुल्मसर्वे मुखदायामु केवना गस्मान्मयै सरुमालि यारु  
 नृवायसस्यग ॥ ० ॥ गलसमस्तु विधेन रुक्मानियाक दावसमस्तु मुखयाक  
 धुक्क अर्थन मुखदायल विनालर्ग रुक्मानि चूर्कन यमाय ॥ १७ ॥ याज्ञानि



याचमानुः सनेगाक मथागुनाशायहाखर्गनिवाह ॥ यूसु लस्य प्रनागर्म ॥  
 ० ॥ रूनीनया जलयाकायीस ॥ नाजासु सननागु लदयु ॥ उहाकातिदयकोव  
 यत्रुसमसुर्गयायशयुव ॥ लदि ॥ वृद्धिशयुव ॥ ४१ ॥ मुखोडिथाचमानुः  
 गुयादावामलायग ॥ मुजलसुमथना ॥ ल ॥ नल ॥ कयगन ॥ धुव ॥ ॥  
 मुख ॥ याजलयाकायीस ॥ नाजासु ॥ सननायाषलदयुव ॥ सुयाकिरु ॥ द्राव ॥ किव  
 ल ॥ आमाचकिव ॥ यत्रुसनलकवानकिव ॥ ४२ ॥ गस्मासुमिष्वनानिच्य

धर्मकामार्थद्वय ॥ गु लवनंजिया ॥ क ॥ गु लहीनविमर्जय ॥ ० ॥ धर्मपाक  
 न ॥ यनप्रजाजान ॥ धर्म ॥ अर्थकामद्विद्यायल ॥ गु लवन ॥ यु ॥ याजलव मात्र ॥ गु ल  
 दीनयु ॥ गालगमार ॥ ४३ ॥ यः किचुग ॥ ४४ ॥ गुरीवायदिवा ॥ गुरी ॥ ननसर्व  
 द्रगगाज ॥ सुकृमइरु ॥ गेनाया ॥ ० ॥ गु लवन ॥ याजलयाल ॥ अर्क ॥ न ॥ गु  
 रायादन ॥ मुकृगयादन ॥ नाजासु ॥ वृद्धिमानयायु ॥ १० ॥ यथादमयनिक  
 नायगा ॥ रुन ॥ दने ॥ गु गथायु ॥ यमयाव ॥ कुल ॥ लीलनकर्म ॥ ० ॥ गथा ॥ रुस्य







वर्ज्यः यत्र दस्यमरुत्सुखं ॥ ० ॥ विद्यति सुमत्तवर्गिनि धरुत्सुखं ॥ ० ॥  
याश्चामवदः ॥ मामिमांश्चरुत्सुखं ॥ सनत्तमदसर्जन्तः ॥ धरुत्सुखं ॥ महान्मोक्षयया ॥  
सुखदयु ॥ १०५ ॥ नानकजित्कस्य चित्मिर्णं ॥ नकजित्कस्य चित्मिर्णः ॥ कालनादद  
वा यन्ने ॥ मित्रनात्रियवसुध ॥ ० ॥ मित्रदयुर्वकालनः ॥ सज्जनदयुर्वकालनः ॥  
मित्रवसर्जनवः ॥ इत्युक्तयुर्वकालनदत्तदाव ॥ १०६ ॥ कार्यार्थः ॥ राज्ञां का  
नलाकयनमार्थकः ॥ श्वत्सुक्षीनद्वयदृष्ट्या ॥ यत्रिग्यष्टिमातर्न ॥ ० ॥ कार्याया

अनूकर्मलः ॥ लाकयोरुत्तमालः ॥ गार्थांश्चरुत्सुखं ॥ सवानदृष्टान्मदयाव ॥  
मासां गालगर्न ॥ १०७ ॥ कृतः ॥ वृत्तानि नानिदा ॥ अगृह्यस्य कृतावति ॥ कृतः ॥  
॥ १०८ ॥ द्रव्यविदुस्य ॥ इज्ज ॥ तस्य कृतावति ॥ ० ॥ ॥ वृत्तानि सनगृह्यया ॥ इज्ज द  
मदः ॥ इज्जिमदवया ॥ त्रिग्यष्टिमातर्न ॥ गालनया सुखमदः ॥ इज्जनया ॥ कृतमार्गमदः ॥  
१०९ ॥ ॥ गालनस्य कृतावति ॥ इज्जनस्य कृतावति ॥ गालनस्य कृतावति ॥ गालनस्य कृतावति ॥  
लाः ॥ कृतः ॥ सगवकोमिना ॥ ० ॥ ॥ र्वुयामान्यः र्वमदः ॥ इज्जनया कृतमार्गमदः ॥ र्वमदः ॥



मदीयसुनहात्वंमदा॥ कामियासुगुत्वंमदा॥ ५० ॥ इवैतस्यवहोनाजाःवाहोनां६  
 दीनंवनपुवहंमृत्स्यभानत्वचोहोनांअनृगवहं॥ ० ॥ इवैतयावनश्वंनाजा  
 वाहकयावतलोय॥ मृत्वावतनश्वं॥ नानमवास्यच्चय॥ खयावतअनीमियाय  
 ५१ ॥ अना॥ धानांदविज्ञाना॥ वाहतरद्वगयन्विनांअनाययविरुणानां॥ सु  
 ब्रमायाधिवगति॥ ० ॥ निर्गति॥ तासनया॥ वाचकया॥ अथया॥ धुनिर्या  
 गतिश्च॥ नाजात्वं॥ ५२ ॥ व्याधिरस्याधदिनस्य॥ गच्छसिधुनाजितस्यच

हृदयसाकदम्बस्या॥ सुहृद्दम्बनिर्माद्यर्थं ॥ ० ॥ वाचिनविचनवाच-वा  
दद्वयाथशून-विस्तयमायाव-वाद्यथशून-गुरुव-ल्योकाव-गुरुन-गान-विया  
वगयोमाथशून-हृदयस-साकदहनयाव-वाद्यथशून-धृतियाउभविशून-हृति  
याखालसाय॥ ६३ ॥ आहुत्यवग्ननयार्थ-दृष्टिक-गुरुवियहन-नाज्ञा  
दाय-समानवा॥ ० ॥ आयसंशून-आयलिमथशून-नमदनेथशून-गुरुव-का  
युदगदावथशून-नाज्ञासकृदिविशून-दावथशून-धृतिसविवानयाकद्वैव-धुधाय॥



॥ ६४ ॥ तावत्तु हिमन्व्यानां क्लृप्तं सर्वकर्मसु न तावन्वृमिणा कानां तावन्  
दिगाननां ॥ ० ॥ मित्रयो माचू कर्म ॥ तावमाह नख ॥ शिवमययन ॥ तौ वमो मुनरवो ॥  
प्राचयस्त्रालचमययन ॥ तावमाह नख ॥ ६७ ॥ नयवविद्यनकाव ॥ याया ॥ न  
चमृत्तमयः तावन्विद्यनयव ॥ गत्मा तावमदरुव ॥ ॥ नि नः ला द्वास ॥  
चासयवमदग ॥ तावमाह नयव ॥ धृति श्रुधम ॥ तावश्रुतिव ॥ ६८ ॥  
निष्ठा न्मिदवगाचार्या ॥ क्लानमाचार्या दवगा ॥ दवगाथा विगातगा ॥ वाक्क ॥

नयवगा ॥ ० ॥ निष्ठाया दवगा ॥ गुन ॥ गुन्या दवक्लान ॥ मीया दवयू  
नय ॥ नाकया दववाक्क ॥ ६९ ॥ विर्ययन्ययथावक्लि ॥ आचार्या यन्यदवगा  
युष्टियन्ययथामात ॥ मिर्तुयन्ययथोत्तर ॥ वाक्कनत्वमाय ॥ अग्निथ ॥ आचार्या  
माय ॥ दवथ ॥ माममाय ॥ युष्टिथ ॥ कायमाय ॥ मिर्तुथ ॥ ७० ॥ गुनयगि  
दिजादिता ॥ वल्कुना वाक्क ॥ तागुनशायगिवाकागुनमुना ॥ सर्वस्यागग  
गुन ॥ ० ॥ वाक्कनयागुन ॥ अग्निदवगा ॥ वगुर्व ॥ युयागुन ॥ वाक्कन ॥ मु

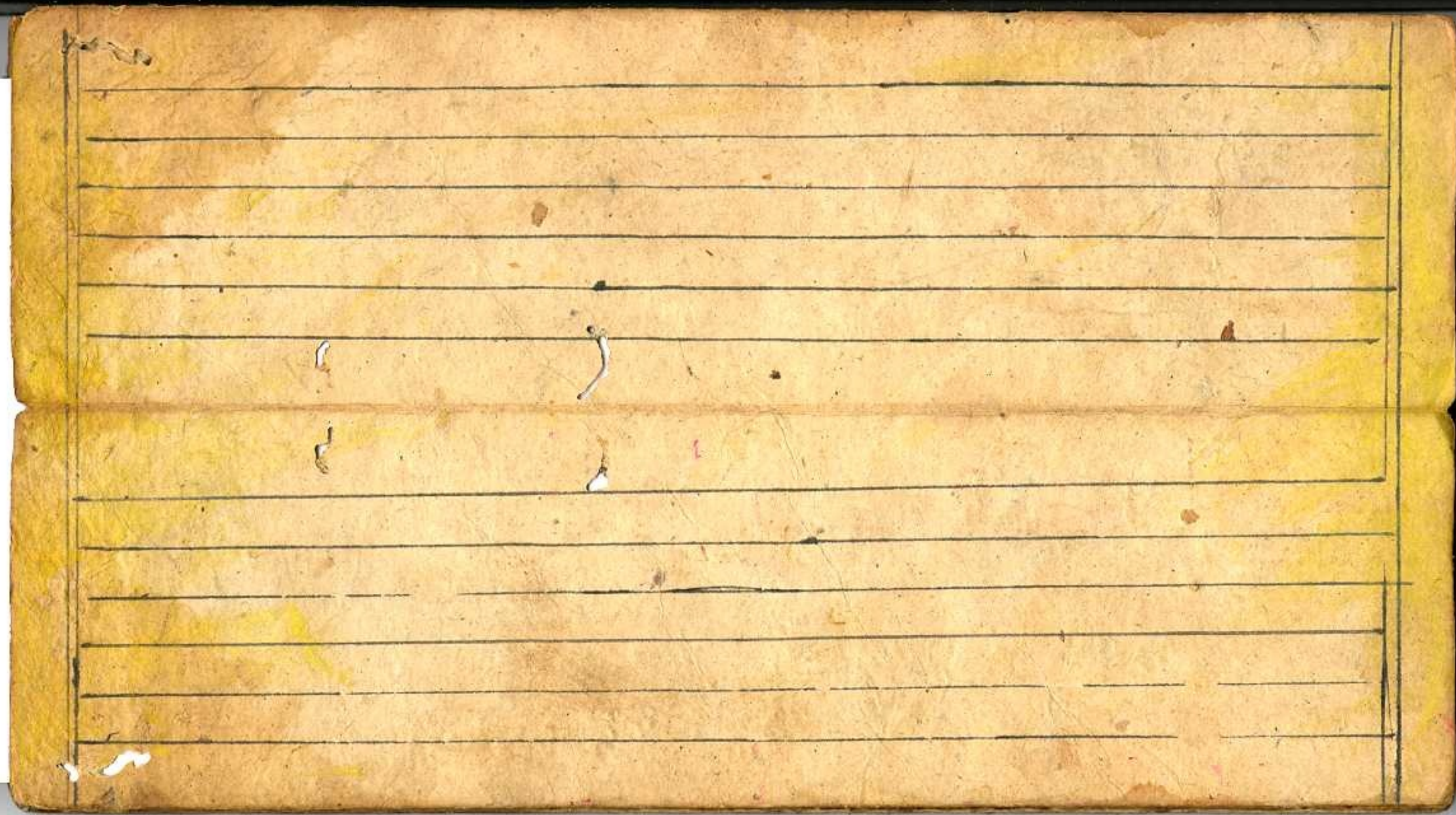


यामुद्रयुत्रय समस्तलोकमागुत्र अत्यागन ॥ ४९ ॥ उद्गमस्यायिव  
लुस्य निर्वोयिगृहमागन ॥ यज्ञनीयायथान्यार्य सर्वस्यागनागुत्रः ॥  
उद्गमस्यायिवसना निर्वोयिगृहमागन अत्यागन न च सदनदान यज्ञमा  
यमात्र ह्यासिना अत्यागनगुत्र ॥ ५० ॥











[illegible]







कामनायायनः नमस्तुतय ४॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥







[illegible][illegible]



नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० ॥

[illegible]







身收

[illegible]

211 x

[illegible]

५७५



[illegible][illegible]



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १० ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १२ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 कृष्णार्जुनसंवादे अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनि-  
 शिष्यं त्वमाह्वयित्वा वक्ष्यास्व मे परमं  
 धर्मं ॥ १ ॥



वसन्ता अथवा नास्त्ययुः कायुषु काज ॥ १ ॥ सुखस्य ॥ १ ॥ सुखस्य ॥  
 मयुवन्तुमि नन्ता नादिगकास्ययायनयुः सुखवदन्ता मानवलिगकुलि ॥ ॥  
 मन्तुगदि ॥ ॥ ॥ कामनान् जन्तुकाय ॥ ॥ ॥ नवयुः सुखवन्ता मानवलि ॥ ॥ सुमा  
 सुदन्तान् मन्तुदिगयादार्थ ॥ ॥ सुमा सुनदिगयागन्ता ॥ ३ ॥ मन्तुसुप्रव  
 कामि ॥ वान्ता नन्तुगान्तिगन्तुयन्तुविज्ञानसुगन्तु सर्वसुखदिगयागन्ता ॥ ॥ मन्तु

3656

अ ८ चापान्च नीति नोचारी आषासहित

ASHA ARCHIVES



सुखं जनज्ञाय द्वा पद्यवानक ॥ अथिस्तु द्वाया ॥ अथनवयुव ॥ ४१ न ॥ अथस्तु ४१  
यामाग्न ॥ गृध्रियनम ॥ अथनम ॥ नृपतावेव्युवकमानासिन ॥ अथस्तु ४१  
७ ॥ मूरवर्णिषाय द ॥ ४१ न ॥ इक्षुसु ॥ नृपनचनदी वनासि यथा ॥  
८ ॥ यदिता ॥ अथवला दनि ॥ ० ॥ मूरवर्जागिस्तान्यथज्ञान ॥ कचविज  
स्मीः वस्तु आरननवियथज्ञान ॥ द्वावकिं दयादवीका ॥ ४१ वसविषा

यथज्ञान ॥ थानियनकाव ॥ यदिगज्ञानसनां ॥ अवसानयादवनिव ॥  
९ ॥ ॥ अथनिही ॥ अथरुसंयक् ॥ यदिग ॥ अथरुसंयक् ॥ अथनिहिंसदमि  
गृह ॥ अथनिहिंसनावणी दनि ॥ ० ॥ अथगयायज्ञानं ॥ अथनिकवर्षवाज्ञा  
यज्ञानं ॥ यदिगव ॥ मिगृसज्ञानयायज्ञानं ॥ अथलवनक ॥ अथव ॥ थथ  
याक ॥ अथवसानवनयमरुव ॥ ४१ ॥ ॥ अथनिकानां ॥ अथगानी ॥ मथया



नां वदंति नां सुती नां नाज कु ना नां व विदुर्दुर्गि गायूरव ॥ नायव धरु न  
विवधरु न मगवानवधरु न किमिवधरु न मिसाजनवधरु न नाजकुलवध  
रु न धुमिसुव विस्वासयागढाव धवस्त्रिया आयसनिन नारियं दामां वन  
रवा ॥ १ ॥ वेला नासद विस्वासं ॥ यान लकुठुमिन्न निनमव द्वाय व

मंसय ॥ यमियेति वक्षत ॥ ॥ ग्वन वृ पू ल रव सान ॥ स ॥ सीधिया  
य ॥ यन ॥ धु ई मिसा चा स द्द उ वय कं च द ॥ निमान कति दन नि ॥  
इ उ न चाय ॥ ६ ॥ धन कं ययाने वृ विद्या स ग्रह ॥ न वृ च ॥ आ हाय  
व व हा न व ॥ य क न द्वा स दान व ॥ धन साहा सया य स व ॥



वाक्कैकायसथइन ॥ विद्यासथसथइन ॥ भक्तभक्तस०इन  
 यवदानस०इन ॥ ८५॥ तिसनाउनाउनासाव ४॥ २॥ नगुर०ग  
 इहामागा ॥ नगुर०सहृ०यिगा ॥ यस्ताव ॥ स्तामलाद्याव ॥ सस्तावदधिइ  
 स्तन ॥ १० ॥ यनवृ०यवृ०यामामवृ०ग ॥ ववृ०गु० ॥ इस्तनसस्तावदगदो ॥ म

मृदंगनयनं स्व॥ १० ॥ सातार्गंगसमगीर्थयितायस्कनभवनः शुद्धकजन  
समगीर्थसातार्गंगयूनयून॥ ॥ नवप्रलखद्यासासइन॥ निर्वर्गग  
द्यस्व॥ वृद्धनरिद्वयस्कननिर्धश्रव॥ नृद्धनरिद्वय  
व्यानि॥ र्थश्रव॥ सासइनरिद्वयस्कन॥ नृद्धन ॥ ११ ॥



विद्यालूयं कुर्यात् ॥ कामालूयं न यश्चिनां ॥ काकिनानां स्वनलूयं  
नालिलूयं प्रतिवृत्ता ॥ ४ ॥ ध्वानमतिदयालूयं इति विद्या ॥ नयस्यायालू  
पकनं कसा ॥ काकिनयालूयं इति ॥ स्वनन ॥ ५ ॥ यालूयं इति प्रतिवृत्ता  
॥ ६ ॥ नच विद्यासमावन् ॥ नच व्याधिसमावित्यु ॥ नचायनं समास

॥ ७ ॥ नच देवायनं वनं ॥ सर्जनं ननु सा विद्या बहुपसद ॥ स कुरु इति  
सा व्याधिव ॥ ८ ॥ पसद ॥ सनं हा इति साय ॥ ९ ॥ काच बहुपसद ॥ १० ॥  
वैलि इति सा ॥ विष्णुग्राहकं पसद ॥ ११ ॥ १२ ॥  
विद्यायुवातिनामिग ॥ रायामिग गुरु वृत्त ॥ आउत्ता मायतिमिग ॥ धर्ममिग



यनरावा०॥ यनदंग्यामिगविद्या॥ क्युयामिगस्त्री॥ नार्ययामिगडा वधि  
उलाक्यामिग॥ वमी॥ १७॥ इनाबीगावृषविद्या॥ अजीलुवृषराजनं॥ वृ  
ष॥ गमिदिसिदिसि॥ वृद्धस्यागनृत्नीवृष॥०॥ गाकातअथासमयाग  
दाव॥ ग्याविद्यावृषइन॥ अजीलुइनदाव॥ नयासूत्रविषइन॥ थमगास

नइनदाव॥ गमिदिसिदाकावृषइन॥ काथयात्यस्यकनागवृषइन॥ १८॥  
अनृया॥ गीरुगाविद्या॥ निरुग॥ गीरुगासि॥ यमकविष्यनदगं॥ दग॥ नृय  
दायैरुगानृयक्षा॥०॥ अथागमयानदावा॥ ग्याविद्याचक्रलइन  
वनअवलमदयकंदिनेयनदाव॥ स्त्रीदालइन॥ अजाग्यायुयलदाव॥



वृद्धा नरा ल डर्मावनमरुं नृदा व ला अदा लइ न ॥ १४ ॥ यस्य पुरुष न वि  
दा ॥ १५ ॥ नरा नान वयदि गव ॥ अश्व को ल कु र्त्त नस्य ॥ ल व व द्ये व सर्व नि ॥  
जन मय नृष पा काय ॥ १६ ॥ स्त्री गी गू न म ड नृदा व ॥ यदि न म ड नृदा व ॥ ध्या  
कु ल व मा ॥ च द्य मा त्व मदा ॥ ना रि ध्या नि द स्य व रा ख ॥ १७ ॥ सर्व नी दी य

का च न्द ॥ य रा न ल वि दि क ॥ १८ ॥ क दि व कृ ष स्म ॥ सूर्य न  
कु ल दि व क ॥ १९ ॥ ना रि स्वर ल य ॥ च द्य मा त्व म न ॥ दिन स्वर ल  
य ॥ २० ॥ अ त्व म न ॥ नृ ना क या म न न य ॥ व स्म त्व म न ॥ कु ल  
याः स्वर न य ॥ सूर्य काय त्व म न ॥ २१ ॥ २२ ॥ जन ना थ ॥ य न ना थ



उम् विद्याय स्रुति ॥ अत्र नाना न्यादाना ॥ यश्च न विनस्मृ<sup>त</sup>  
ना ॥ ॥ धम विद्याय द ई ॥ धम उर्म विव ई ॥ धम यु नि  
या ल ॥ या क ई ॥ नम द न न ई ॥ नय स न न य ई ॥  
धम द ई व द म य ॥ १२ ॥ उ ल य नि ॥ ना ज य नि ॥

मि य नि ॥ न ॥ धे व च ॥ य नि मा ना ॥ स्व मा ना ॥ यश्च न  
धि. मा न स्मृ ता ॥ ॥ उ द या क ना न ॥ ध इ न ॥ ना जा मु ई न  
स न ध इ न ॥ वा च या क ना न ॥ ध इ न ॥ नि या मा स ध इ न ॥  
ध व मा स ध इ न ॥ धम द ई मा स म य ॥ २० ॥







यज्ञाय किं यथा उर्न ॥ न्वन वृत्तस्य न ॥ विद्यास्य न ॥ सत्र चित्र धू मृ व ॥ अस्त्या  
सर्व ॥ क्वा यिव ॥ लू चित्र वृ ॥ अस्त्या सर्व ॥ सदा न दुव ॥ यज्ञा वने न ॥ क्सम त्र व  
॥ २३ ॥ युगस्तु विवी विमास्तु ॥ नीया या गग न वृ ॥ वे धनि नि ह्ला वृ द्वि सं य चा  
रु व नि स्व लू यो जि न ॥ ह्ला नी ला क नः का य या ज ल य ॥ सा सु स ॥ का य ग म स्तु ग न

दा वं ला क स म स्तु ॥ गं ॥ यज्ञ ल पा व ॥ २७ ॥ य० युग कि मा न स्तु ॥ म य ॥ ७ ॥ रा  
ल वा रु क ॥ य० न यु जि गा नो ज्ञा ॥ य० यु ग दि न दि न ॥ ७ ॥ चान क ॥ वि म्भ ॥ ध व  
का य ॥ दा दा ॥ अ ला ग म न ॥ सा सु ॥ ७ ॥ द न ॥ का य वा स्य ॥ सा सु म स न सा ॥ सं सा  
रु दा क वृ य ॥ सा सु ॥ स न सा ॥ राजा नं यु जानं ॥ मा न्य या य ॥ दि न यु गि ॥ ग म्भ ॥ ७ ॥ द



नक्तयत्वं ॥ २८ ॥ गु० क्षुद्रक्रियगार्यं न० ॥ किमनार्येयथाजनं तविक्रियकं नव  
लूपारिभुगमवक्षीतविवर्जिता ॥ ० ॥ गु० सत्ययाद्रुनः अठामनद्रुय  
याजनं ॥ इ० द्वायमदासाय नुनकस्वाय कलसनीं मूलमवश ॥ २९ ॥  
ननेस्यारनलं वृय ॥ वृयस्यारनलं गु० स ॥ गु० स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं

स्यारनलं स्यारनलं क्रमा ॥ ० ॥ मनुष्याया स्यारनलं वृय ॥ वृयया आ  
रुह्यनगु० स ॥ गु० स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं  
२० ॥ गु० स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं  
स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं स्यारनलं



कौलसखगययसिचयइन॥ विद्यासखवगयय॥ सिद्धि  
 इन॥ धनसखवगयय॥ दत्तकृत्तियइन॥ २२॥ अगुनसहैतै  
 य॥ अमिनस्यहैकृत्त॥ अहिश्चदगविद्या॥ अनागस्यहैगार्थन  
 गुनससखदत्तवययइन॥ सिनससिनदत्तवययइन॥

अमिद्धिइनदत्तवयय॥ विद्यासखलइन॥ दत्तकृत्तियइन॥ धनस  
 वइन॥ ३०॥ गुणसखवगययविद्या॥ नागसखवगययवयय॥ सिनसखवगयय  
 वयय॥ सिद्धिहैसखवगययविद्या॥ वययसखवगययवयय॥ वयय  
 अगिननसिन॥ विद्यासखलइनसिद्धि॥ धनसखवगययवयय॥ दत्तकृत्तियइन॥



कि॥ ३॥ <sup>वि</sup>नात्युर्वणि वामदः नानिनिम्वसागरं वयसायसदाया नी  
नानियो वामददो ग॥ ० ॥ उयाययागदो वः मययव्वगवः मउ व्वम  
ह्वनः यागानवक्कयावमश्वनः सागनसमदवः यावयायजीनः ध्वतु अ  
ध्वनः श्वानि लो कनः उआ गयायजुद्विद माल ॥ ३३ ॥ ० ॥ म के न

वगदध्वनः यदमका क्वन लवन अर्वध्वदि वर्म कय्या ७ दानाध्वय  
लकस्मना ॥ ० ॥ अश्विद्विद लः दि नयगिः ॥ ध्व के व्वव नर्ग क ॥ ध्व  
कय दध्विः नक्क लय्वन नर्ग कः दानयायश्वनैस नोः दि नयगि  
अस्माव्विद लः अश्विद्वि नर्ग क ॥ ३३ ॥ याजना नसिद्वि सा नि



वडा नापियिवाणी काः ० अंग वृ वृ वगडा शयिः यदुमकं वगवृ नि ॥  
॥ आसमवृमवनसाः सियानीनः दानद्विधाजनवर्नः मवस्यवानसाः  
गवृउ त्वं ० द्यानाकः मवृ नसासर्वमवनसं यानीनः गवृउ वृलिरि क  
धायोः ० द्यानाया अर्थ न ॥ ३७ ॥ अनियथा ० द्यानि विद्या ॥ अनिय

वृगमात्राः ० अनंद स म्भः कामः द्यायाम्भ जने ० जने ॥ ० ॥  
वनसाहासयायई सः विद्यास्यन्यसः यवृगजायसः धर्मयायसः धृयण  
सनाहननुदवः आसवृयसगवः अरि लाषदयकं ध दग ॥ ३७ ॥  
गुवृ ० द्याययाविद्याः यवृगवननवान् अथवाविद्यायाविद्याः चउ



र्थन्नायनस्य ॥ ० ॥ विद्यानाम शनं ॥ ध्ययगायत्रिन उदव ॥ असायुत्रया  
ल्लुवायाद न ॥ असायुत्रयासनयाव ॥ असायुत्रयागधनविद्याव ॥ असावा  
द्यानविद्याहीनत्वा ॥ ३४ ॥ न काक्षन्निदिदागान ॥ योयुत्रनाहिमन्यन  
नस्वानर्थानिजगत्वा ॥ इन्द्रानव्ययिजायन ॥ ० ॥ ॥ इन्द्रानव्ययनस्य

दद्वंशनसर्वा ॥ गुत्रनिन्दयाका ल ॥ इन्द्रियालविवायाद जायनवी  
व ॥ ॥ इन्द्रियाधयाद जायनवीव ॥ ३५ ॥ युक्तकायत्ययाधीन ॥ ना  
धीनगुत्रे ॥ सत्त्वो न ॥ इन्द्रानव्ययनस्य ॥ इन्द्रानव्ययनस्य ॥ ० ॥  
गुत्रयाकेमस्यस्य ॥ इन्द्रानव्ययनस्य ॥ इन्द्रानव्ययनस्य ॥ ० ॥



॥ ३४ ॥  
जातं यत्नं न जायते यथा भावाद्यं त्वं सामं स लाममं ह्यरु लयनं ॥ ३४ ॥  
नित्यं लोममना लस्यं यादि श्यामि यं सैय हं न अर्था वद न नाविद्या  
यं च न कथा निधि ॥ ० ॥ सिं कमी व्यायानं ला द्वा क मि व्यायानं अ  
ला समथ्य वं साधु न व मि रयायं सा मु हा य कः ध दा ना खून व स्यं

॥ ३५ ॥  
भायं मरु वं अरु यरं चान ॥ ३५ ॥ नदि जर्म नि अरु वं अरु वं अ  
लमच नं न गु ना गु न ल यानि यथा दा धि च नं यथा ॥ ० ॥ अ लम नं अ  
रु यथा यमदा अरु न गु ल थ ल द्वा गु न य नि द्वा या दा व गार्था  
अनसा इ इ ध नि स थ न य मा ल द न ॥ ३० ॥ किं कल न वि ह्य लं न गु



तवायुजिगानल ४ धनर्व जविगुद्रायि ॥ निर्गुनिकिकविष्यणि ॥  
॥ लिग्वकलनचुयथाजन ॥ सर्गुलरू दधन ॥ धर्मलोकनमानयायु  
धनर्व जगजगस ॥ कायचिथइन ॥ निर्गुनिकिनः कावचुयथाजन ॥ ७१  
किंकलनविष्मलन ॥ विद्या हीनमुयाननः ॥ अकूलिनाथिविद्वीसा

देवनेवायियुइन ॥ धनर्वयुस्वर्त ॥ कूलवनेइयाव ॥ क्यथा  
जन ॥ विद्याहिनमुयाइन ॥ सासुनासनसा ॥ अकूलिइनमना  
ग ॥ धदेववृत्तनया ॥ अर्थ ॥ युजनविद्व ॥ ७२ ॥ नावाधि  
चरुवद्विद्या ॥ यावत्याननः ॥ गच्छ कि ॥ उर्नचगनेयने ॥ नोका



यां किंयुथा जन ॥ विद्याशनं नाम उाउ थ्यं ॥ यात्रयायसर्वं ना  
प्र ॥ नामसत्रागत्र विव ॥ यात्रयाय वून दाव ॥ कु ॥ युथान ॥  
७३ ॥ गुनासर्वगुपूथुके ॥ यिगु वसु निनक थ ॥ वासूदवनस  
स्यकी ॥ वसूदनमजना ॥ गिरुवनसगुनरव ॥ पूजायात ॥  
व

वाय ॥ कायधायसइ ॥ अन्नगगुनथुनान ॥ नायायनर्त्त गिरु  
वनर्त्त पूजायात ॥ गुनसथुनान ॥ नायायनसववृत्त ॥ सूनान  
पूजासयाक ॥ ७७ ॥ गुनाकू वृत्तिइनर्त्त ॥ इलेपिवसगासगा  
काकिगन्धमाद्याय ॥ स्वयगगुत्ति वत्यदा ॥ गुनवनकवसन



यत्र थशन ॥ साधू जनवसनयत्र थशन ॥ नथ नायिनथानसर्भा  
कतकिस्वानया ॥ ननरुसनशनवडाथ्य ॥ लकूससर्भा वनिव  
७७ ॥ विद्याल्वचनयल्वच ॥ नहिउल्ययनाकस्मी ॥ खदसयू  
जिभाजा ॥ विद्यासर्वतयूजथ ॥ नाजावविद्यासासुसबझ्वरु

लधायमइ ॥ नाजाशन थवदसगशकसानयायिव ॥  
युनार्थसमानसयक ॥ विद्यासासुसबझ ॥ ७८ ॥ नडानसर्भाजा  
नायिनसमानयायिव ॥ ७९ ॥ नुकेनायिसूयून ॥ विद्याशकेनसाधूना  
रुनयूरुवसिहन ॥ वल्लेनेवयुकाम्यन ॥ सूयूगयाद ॥ विद्या



ननुयाद ॥ सा भूतनयाद ॥ कूलिसयूयसिंह ॥ यादगर्थयन्  
स किन्ननर्थ ॥ किञ्चिद्युक्तसयायरु ॥ केचुङ्गकार्यन ॥ गमक ॥  
वियाराजनकश्चि ॥ कश्चिद्व्यम्याराजन ॥ इतथाताजनकश्चि  
कश्चिभारयगान ॥ गुलिच्छिना ॥ कलाकयारावाधवा ॥ गुलिच्छिना ॥ दद्ययारु

वा ॥ गुलिच्छिनालाकविद्यासव ॥ दद्यधव ॥ गुलिच्छिनालाक ॥ विद्यामसव ॥ दद्यमधव  
॥ ९८ ॥ नमकिरुलिनां वृक्षा ॥ नमकिगुलिताजना ॥ सूक्तकासुच ॥ मुखेकर ॥ सिद्धत  
नेवमन्यत ॥ ० ॥ स्यसवसिमोन ॥ भवूनमस्कावमयाक ॥ गुलहानधवकान ॥ भवून  
मस्कावमयाक ॥ गढसिधशल ॥ मुखेश्चथशल ॥ यवयूय ॥ मजिव ॥ तवयनकम  
जिव ॥ मुखेलाक ॥ क्यथाजन ॥ मधा ॥ ९९ ॥ नहिकमालिवत्वावि ॥ सन्याकावय



आजयत् । आहवमेधननिदा । तथास्वाध्याभवत् ॥ ० ॥ ध्ययताकर्मसन्धिवंशसुमतेव  
आहल मेधनं कृतेवयकं यत्रय ध्ययतामतेव ॥ १० ॥ आहवजायतयाधि य  
हकलध्वयतं अलक्ष्मीवन्धसञ्जाया सपापदायकं ॥ ० ॥ ध्यतसंमिध्वलासमतेव  
आहलयातसा लोभजायतपित्र मेधनयातसा उंकयूजायलपित्र क्रिदवय  
कलसा लक्ष्मीनवासमयाय स्वाध्याययातसा अकालमृत्कनमायव ॥ ११ ॥

वन्दवदामनखला ॥ जयहासयनाकर्म ॥ आशिवोदयनानित्यं ॥  
नमनाकृत्यनाहित ॥ ग्यनपूर्वाङ्कनव वन्दवदामनखला जयहोमकि  
यावत् आशिवोदयहाव नाकास्यपूर्वाहितयाय नथेदङ्ग ॥ १२ ॥ याङ्कासन्निव  
महियाव छिदकर्मविवर्जित ४विधुनवपरित्यागि समइखसमसूख ॥ ० ॥ हलिका



मल, किदवचनमहाक, वियहिवलसत्यागि, इष्टसूखउल्लयाक, ध्वजराजायासइव  
॥ २३ ॥ कूलगीलगुणायन, सत्यधर्मपरायन, यविनयन, पदक, राजायाकाविधियन ॥ ० ॥  
कूलशि, लारावलि, गुणवक, सत्यवक, धर्मआर्मा, चतुव, विवदण, दमावक, थायिग्वर्क  
राजायइव ॥ २४ ॥ कूलवागनिनलुव, अपगक, सदाऊव, अनायवायक, लोव, नाधिपही

निजाजयन ॥ ० ॥ काधि, कौकामसक्य, लारि, इनीमइव, आऊव, आयमससवययाक  
थायिग्वर्क, राजायमगेव ॥ २४ ॥ मूलवृहदिताधील, सर्वननयविदक ॥ २५ ॥  
ध्वजवागनायिध, धर्माधका, विधियन ॥ ० ॥ काकार्यशर, काकार्यसधीलवक,  
समसुवन्नपविष्ठायाक, गीलवक, वावसायाक, ध्वजधाम्मिकधाय ॥ २६ ॥



ASHA ARCHIVES 3656